515

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 HL-2405

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Karmveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5 / 8 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	0	5	5	9	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

9:40

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

सामान्य अर्थों मे लिया जाए तो हिन्दी भाषा का क्षेत्र से तात्पर्य है, जहाँ हिन्दी प्रमुखता से प्रचलित हो तथा प्रयोग मे ली जाती हो।

• सर्वप्रथम भारत के उत्तरी राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में हिन्दी सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा के रूप में कार्य कर रही हैं।

• भारत के कुछ हिस्से जैसे- महाराष्ट्र, तेलंगाना इत्यादि में हिन्दी को अच्छे तरीके से समझा जाता है और बोला भी जाता है।

• पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी भारत के लोग भी हिन्दी को समझते है तथा गाँव-देहात के लोग अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी को प्रमुखता प्रदान करते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* हिन्दी भाषा का क्षेत्र भारत तक ही सीमित नहीं है, इसका प्रभाव विदेशों तक है जहाँ गिरमिटिया मजदूर जैसे ऐतिहासिक कारणों से यह अफ्रीका महाद्वीप के कुछ हिस्सों मे प्रचलित है।

* हिन्दी को मॉरिशिश तथा अरब राज्यों मे भी प्रमुखता से प्रयोग में लिया जाता है।

हम कह सकते है हिन्दी भाषा का एक विस्तृत क्षेत्र है लेकिन अभी भी इसे संयुक्त राष्ट्र की ऑफिशियल लैंग्वेज जैसे प्रयास तथा भारत में एकमात्र राजभाषा स्थापित करना हैं, जिसके लिए हिन्दी भाषा मे लगातार ध्वनि व्यवस्था तथा व्याकरणिक स्तर पर सुधार हो रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक उग्रवादी नेता थे। उग्रवादी विचारधारा में अंग्रेजों से जुड़ी सभी भावों, विचारों, वस्तुओं का बहिष्कार शामिल था। साथ ही उन्होंने लोगों में स्वदेश के प्रति जागरूकता फैलाई।

स्वदेश के लिए जागरूकता के क्रम मे उन्होंने हिन्दी का पालन-पोषण किया। उन्होंने अपने भाषणों, तर्क-वितर्क मे हिन्दी का बखूबी प्रयोग किया। मराठी भाषा का प्रयोग 'केसरी' पत्र मे किया तथा जन-जनता से आह्वान किया कि "स्वतंत्र भारत की एकमात्र राजभाषा हिन्दी ही होनी चाहिए।"

तिलक जी ने अपना नारा 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" में हिन्दी का प्रयोग किया जो सीधा लोगों को जोड़ रहा था। यह प्रयास था

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप मे स्थापित करने का।

* इसके साथ तिलक जी ने स्कूल-कोलेज पद्धति भारतीय भाषाओं मे शिक्षा की वकालत की। हालांकि उन्होने अंग्रेजी को भी सपोर्ट किया क्योंकि प्रबुद्धजन ज्यादा अंग्रेजी से जुड़ा हुआ था। लेकिन क्रान्ति तो जन-जन से होती है। इसलिए उन्होनें हिन्दी को प्रमुखता प्रदान की।

तिलक जी स्वतंत्र भारत में अपने स्वतंत्रता आंदोलन मे दिए गए योगदान के लिए जाने जाते हैं. उससे कहीं अधिक हिन्दी उनकी ऋणी रहेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

मध्यकालीन भारत में ब्रज भाषा को प्रमुखता प्रदान की गई, लेकिन आधुनिक काल में भारतेन्दु युग में व्याकरण संबंधी बहुरूपता, वाक्य संरचना में शिथिलता तथा अन्वयहीनता सामने आने लगी।

इससे प्रेरित होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' में हिन्दी भाषा के मानकीकरण को जोर दिया। उन्होंने समझाया कि व्याकरण में एकनिष्ठता आनी चाहिए, साथ ही अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को या तो अनुवाद करके स्वीकारा जाए या उसे उसी प्रकार स्वीकार लिया जाए जिस तरह प्रचलित हुआ है।

इन्हीं का प्रभाव था कि हिन्दी भाषा मे किशोरीदास वाजपेयी तथा कामता प्रसाद गुरु ने हिन्दी के लिए

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरण व्यवस्था का निर्माण किया।

आचार्य द्विवेदी ~~भारतीय~~ भारतेन्दु युग में चल रहे भाषायी द्वैत को भली-भाँति जानते थे। जब भारतेन्दु ने 1873 मे लिखा कि 'भाषा नये चाल मे ढली' तब द्विवेदी जी का यह प्रयास था कि आधुनिक साहित्य को खड़ी बोली ही समा सकती है इसलिए गद्य तथा पद्य में एकनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया जाए।

द्विवेदी जी ने संस्कृतनिष्ठ तथा फारसीनिष्ठ में भी "हिन्दुस्तानी शैली" को आगे बढ़ाया जो प्रेमचन्द जी के साहित्य में दिखती है।

हम कह सकते है कि आचार्य द्विवेदी जी साहित्यिक रूप से जरूर कमजोर थे, लेकिन हिन्दी भाषा के सुधार के रूप मे उनका अविस्मरणीय योगदान याद किया जाएगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य का रचनाकाल 9-13 वी सदी के मध्य माना जाता है। नाथ साहित्य में सिद्धों के विपरीत निवृत्ति मार्ग पर ध्यान दिया गया है।

नाथ भी सामान्यतया: घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे उनकी रचनाओं में अर्धमागधी अपभ्रंश की तरफ झुकाव प्रतीत होता है। उदाहरण- स्वरूप

"नौ लख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेले, तब अन्तरि बसै भण्डा।।

यहाँ शब्दों के स्तर पर खड़ी बोली के बीज दिखाई देते हैं, हालांकि व्याकरणिक स्तर ब्रज का प्रभाव दिखता है। इसी तरह 'नौ' संख्याओं के पूर्ण विकास की प्रवृत्ति खड़ी बोली के समान ही है। इसी तरह 'ण' वर्ग का बहुतायत प्रयोग खड़ी बोली का स्वरूप दिखाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण स्वरूप

जाणा के अजाणि होय, बात तू ते पछाणि
चेलो होइयो दुआ लाभ होइगा, गुरु होइयो भाणि

यहाँ न के स्थान पर 'णं' का प्रयोग किया गया है। खड़ी बोली की विशेषता को दिखाता है।

इस प्रकार नाथ साहित्य के विभिन्न स्वरूपों में खड़ी बोली का हिन्दी प्रारम्भिक स्वरूप देखा जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर नातिदीर्घ निबंध लिखिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

3. (क) अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विस्तार पर प्रकाश डालिये। 20

ब्रजभाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है जिसका विस्तार आदिकाल से वर्तमानकाल तक अखिल भारतीय स्तर पर दिखता है।

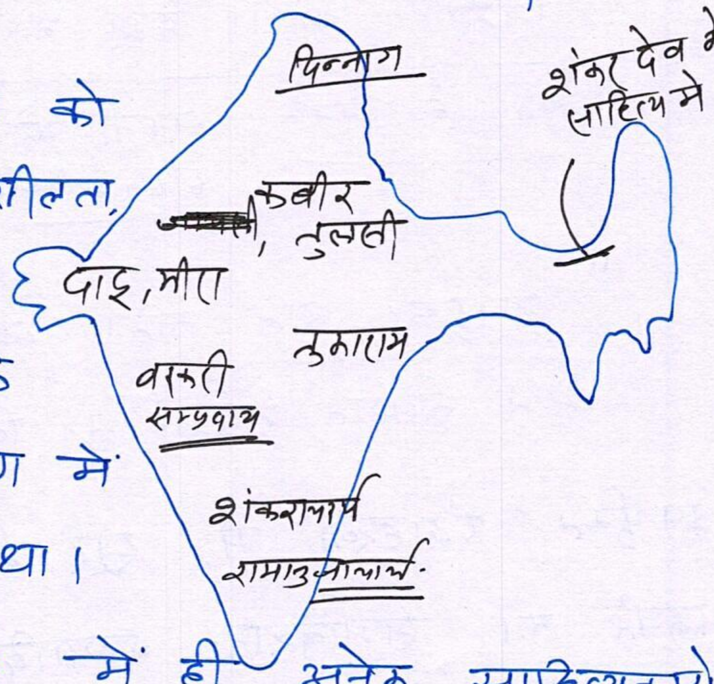

ब्रजभाषा को उसकी कल्पनाशीलता, कोमलता, तथा रचनाशीलता के कारण प्रयोग में लिया जाता था।

आदिकाल में ही अनेक साहित्यकारों ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया था लेकिन इसकी प्रणिति सूरदास के समय हुई। जब शुक्ल जी भी कहते हैं-

"एक चलती हुई ब्रजभाषा का पहला साहित्यिक रूप सूर के साहित्य में मिलता है जो अपनी पूर्णता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के कारण आश्चर्य मे डाल देता है।
जिसमें सूर ने ब्रज को अखिल भारतीय स्तर पर ले गए। सूर ब्रज क्षेत्र में लिखकर रचनाकर्म कर रहे थे। कुछ उदाहरणों से समझते है-

"निर्गुण कौन देश को बासी
को है जनक, जननी को कहियत है, कौन नारी को दासी

"मधुकर स्याम हमारे चोर
अति कृसगात भई है तुम बिनु दुखारी गाय।

उपर्युक्त उदाहरणो मे सूर की भाव वक्रता, प्रकृति का समावेशन इत्यादि का चरम स्तर दिखता है तथा कल्पनाशीलता तथा बिम्बात्मकता श्री कृष्ण के बचपन मे दिखती है-

मैया कबहि बढ़ैगी चोटी
किति बार मोहि दूध पियत भई
यह अजहूँ है छोटी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसके अलावा राजस्थान क्षेत्र मे मीरा बाई, दादू तथा बिहारीलाल रचना कर रहे थे रीतिकाल में बिहारी को तो प्रवर्तक कवि माना जाता है। उनकी बिहारी सतसई देह तथा श्रृंगार मे डूबी हुई है।

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंह करे, भौंहनु हँसे देन कहे नट जाय

पूर्वोत्तर भारत मे असमिया वैष्णवाद के प्रवर्तक शंकरदेव भी ब्रजभाषा का प्रयोग कर रहे थे

महाराष्ट्र क्षेत्र मे सन्त तुकाराम, पीपाराम जैसे व्यक्तित्व वरकरी सम्प्रदाय के शिक्षण प्रसार के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग कर रहे थे

इसके अलावा दक्षिणी भारत मे भी शंकराचार्य, रामानुजाचार्य इत्यादि सन्तों ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हालांकि यहाँ प्रयोग हिन्दी के उत्तरी भागों की तुलना मे कम है लेकिन उपयोग जरूर हुआ है।

ब्रज का प्रयोग भारतेन्दु युग मे भी चलता रहा जहाँ भारतेन्दु ने तो ब्रज को ही पद्य मे स्वीकार किया। उनका मानना था कि पद्य मे ब्रज भाषा उपयुक्त है, वही गद्य मे खड़ी बोली।

इस तरह ब्रजभाषा पूरे भारत मे प्रयुक्त की जाने वाली बोली थी तथा साहित्य में भी प्रयोग में आई। आज भी यह मथुरा, आगरा, ग्वालियर, मुरैना क्षेत्र में फल-फूल रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

क्रिया का अर्थ होता है - कुछ करना अर्थात् जिन शब्दों से कुछ करने का बोध होता है। उन शब्दों को व्याकरणिक रूप पर प्रयोग करने पर क्रिया व्यवस्था कहलाती है।

क्रिया व्यवस्था

- सकर्मक
  जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है।
  उदा.- वह खाना खा रहा है।
- अकर्मक
  वह क्रिया जिसमें कर्म की आवश्यकता नहीं होती है।
  उदा.- वह खा रहा है।

इसके अलावा क्रिया को दो भागों में और विभाजित किया जाता है-

सामीप्य / असामीप्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिस क्रिया से समाप्त होने का बोध हो वह सामीप्य क्रिया कहलाती है वही असामीप्य इसके विपरीत अर्थ मे प्रयोग होता है।

इसके अलावा हिन्दी साहित्य मे संयुक्त क्रिया का प्रयोग किया जाता है

मुख्य   संयोजी   रंजक   सहायक

उदा.

वह आज चावल दावल खा रहा है। और पानी पी रहा है।
इसमे खाना, पीना → मुख्य क्रिया।

और → संयोजी क्रिया
चावल → सहायक क्रिया
है → रंजक क्रिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस तरह क्रिया व्यवस्था को
हिन्दी साहित्य में प्रयोग किया जाता है
जहाँ अंग्रेजी साहित्य मे क्रिया के तीन
भेद किए जाते है - I, II, III form
वहीं हिन्दी साहित्य मे क्रिया इस रूप मे
आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूफी काव्यधारा मे अवधी मे मुल्ला दाऊद की 'चंदायन' मिलती है, उसके बाद जायसी की पद्मावत इस परम्परा को प्रतिष्ठा तक पहुँचाती है

इस परम्परा मे प्रयोग मे आई अवधी की भाषिक प्रवृत्तियाँ

① संज्ञा के तीन रूप मिलते है-
उदा लरिका, लरिकवा, लरिकउवा

② उकारान्त बहुल भाषा है-
उदा. चालु, कटु

③ ड > र, व > ब, ~~ण > न~~ ण > न
उदा. सड़क > सरक वचन > बचन

④ ऐ, औ का प्रयोग संध्यक्षरों के रूप मे प्रयोग होता है-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पिया > पिउ   कौन > कउन।

(5) कहीं-कहीं अल्पप्राणीकरण का महाप्राणीकरण किया जाता है। विपरीत परिस्थितियाँ भी पाई जाती है।

मुझको > मुजको   मुरख > मूरख

व्याकरणिक रूप में

(i) संज्ञा का एक रूप मिलता है।
(ii) एकवचन से बहुवचन से इयाँ, आनी, नी प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
बेटी > बिटियाँ
(iii) वर्तमानकाल के लिए त रूप का प्रयोग किया है, भविष्यकाल के लिए ब,ह रूप तथा भूतकाल के लिए स,ब रूप प्रयोग में लिया जाता है।
(iv) सर्वनाम व्यवस्था
उत्तम - मोहि, मो, मोरे.
मध्यम - तुहि, तेहि
अन्य → वाहु, वाके

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(V) कारक व्यवस्था

कर्ता - ×
कर्म - को, कौ, लागि
करण - तेहि, ताहि
संबंध - कोहि, केहि।

(VI) विशेषण व्यवस्था

जम्हाई लेती लड़की > जम्हाईयाँ लेतियाँ लड़कियाँ

इस तरह शब्दकोश स्तर पर अवधी में पद्मी जैसे पूर्वी योग वहीं अवधी हो के दवंगरा जैसे शब्दों का प्रयोग किया। साथ ही अर्थ स्तर पर राम-शिव की कथा इत्यादि का उपयोग किया है।

भाषिक तौर पर अवधी भाषा एक उत्कृष्ट है। जिसकी प्रशंसा शुक्ल जी ने वेमेल मिगास से की है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शौरसेनी अपभ्रंश से राजस्थानी बोली की उत्पत्ति मानी जाती है। यह हिन्दी राजस्थान मे प्रचलित है। साथ ही हरियाणा तथा मध्यप्रदेश में भी प्रयोग में ली जाती है।

राजस्थानी हिन्दी
- मालवी
- मारवाड़ी
- जयपुर या ढूंढाड़
- मेवाती

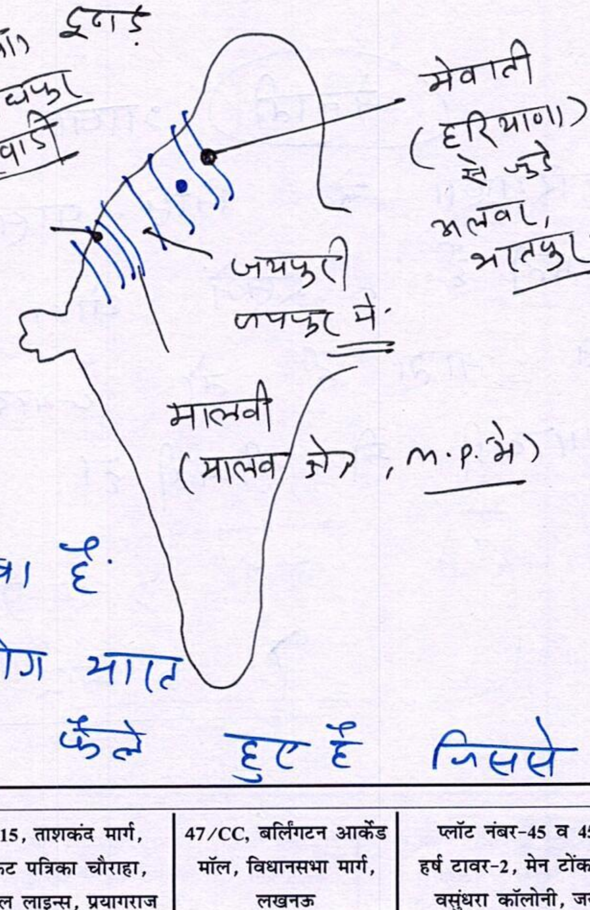

भाषिक विशेषताएँ

यह भाषा मे सर्वाधिक प्रसिद्ध ~~भाषा~~ मारवाड़ी भाषा है। क्योंकि मारवाड़ी लोग राज्य के अनेक जगह फैले हुए हैं जिससे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह समृद्ध शब्द भाषा है। इसमें भाषाओं तौर पर ओकारान्त बहुल भाषा है।

उदा. बो कहै गयो

→ व की जगह ब तथा ह की जगह ठ का प्रयोग दिखता है।

→ न → ण का प्रयोग व ल की ळ का प्रयोग दिखता है।

जल > जळ । पानी > पाणी

(मेवाती) भाषा अलवर, भरतपुर हरियाणा के आस-पास क्षेत्रों में बोली जाती है, इसमें थोड़ा कड़कपन हरियाणवी से आता है तो ज्यादातर विशेषताएँ मारवाड़ी की दिखती है। कुछ नए प्रयोग

जैसे- क्यों > क्यूँका
कैं > कार्इ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ढूंढाणी / जयपुरी भाषा में ज्यादातर समानताएँ होने के बावजूद कुछ भिन्नता दिखती है जहाँ अठे की जगह अळे का प्रयोग होता है।

जैसे वहाँ, यहाँ → बठे, अठे का प्रयोग होता है।

मालवी ज्यादातर ब्रजभाषा से प्रभावित क्षेत्र है जिसमे ज का प्रयोग विशेषतया से होता है।

इस प्रकार राजस्थानी भाषा में साहित्य के रूप मे चंदबरदाई का पृथ्वीराज रासो है तो मीरा के कई पद राजस्थानी भाषा मे दिखते है। दादूपंथ सम्प्रदाय के लोग भी दादू की शिक्षा राजस्थानी हिन्दी मे समझते है।

राजस्थानी हिन्दी की विशेषता इस अर्थ मे है कि इसने वीर रस का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भरपूर प्रयोग किया है चाहे वह रासो काव्य मे हो या अन्य काव्य। आधुनिक काल में भी केसरी सिंह बारहठ, रघुवीर जी इत्यादि राजस्थानी हिन्दी मे काव्य तथा लेखन कार्य कर रहे है।

हिन्दी के विकास क्रम में अनेक बोलियों का विकास किया हुआ जिनमे राजस्थानी प्रमुख थी। आज राजस्थानी हिंदी इतनी विकसित हो गई है इसको अलग से संविधान की 8वी अनुसूची मे शामिल करने की मॉग की गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

already पहले लिख चुकी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ संस्कृत भाषा मे तीन लिंगो का प्रयोग किया जाता है- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा उभयलिंग। वही हिन्दी साहित्य मे ~~साधारणीकरण~~ होते-होते दो लिंग रूप बचे।

पुल्लिंग | स्त्रीलिंग

हिन्दी साहित्य मे पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग विभाजन के कोई विशिष्ट नियम नही है, इसे सामान्य प्रयोग मे देखते हुए पुल्लिंग व्यक्तिवाचक को अकारान्त से पहचाना गया।

उदा.- कुलदीप, रमेश, सुरेश।

वही पुल्लिंग जातिवाचक वाचक संज्ञा को सामान्यतया: आकारान्त का रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दे दिया गया।

उदा- वे लोग

सामान्यतः संस्कृत के तीसरे लिंग उभय लिंगों को पुल्लिंग में मान लिया गया।

जैसे- आत्मा को पुल्लिंग में।

वहीं अंग्रेजी साहित्य मे भी 4 लिंग की व्यवस्था है, उसे भी दो मे शामिल कर लिया गया।

हालांकि लिंग व्यवस्था मे प्रयोगशीलता को आधार बनाया गया है, लेकिन लिंग व्यवस्था मे कई समस्याएं भी आती है।

जैसे- आत्मा - पुल्लिंग मे आती है तो आत्माएं स्त्रीलिंग मे आती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

लिंग व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार निश्चित न होना।

भाषा के साधारणीकरण मे लिंग व्यवस्था का साधारणीकरण हुआ। आज भी भाषा वैज्ञानिक रूसे वैज्ञानिकता तथा अनुशासता लाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो 14वी शताब्दी में आधुनिक हिन्दी के शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। यह तथ्य ~~चिन्ता~~ आश्चर्य मे डाल देता है, स्वयं शुक्ल जी ने भी कहा है "उस समय भाषा इतनी चिकनी हो गई थी जितना खुसरो कर रहा था"

इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है जिस प्रकार फारसी की अन्तर्क्रिया से आधुनिक हिन्दी का विकास किया। उस समय खुसरों को भी वही परिस्थितियाँ प्राप्त थी।

खुसरों ने खड़ी बोली का एक प्रयोग यहाँ दिखता है-

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा गिरा।
चारो ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"खीर बनाई जतन से, चरखा दिया चलाय
आके कुत्ता खा गया, अब बैठि ढोल बजा।

यहाँ खड़ी बोली का शब्दों के स्तर प्रयोग दिखता है

वही एक प्रयोग में खुसरो खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा को एक दूसरे से मिला देते है।

खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबे सो पार

इसमें वाकी शब्द को छोड़ खड़ी बोली के बीज दिखते है।

हम कह सकते है खुसरो एक लेखक थे जिसमें वे फारसी, उर्दू के महान ज्ञाता थे लेकिन हिन्दवी का प्रयोग उनके साहित्य मे बेहतर दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। यह कन्नौज क्षेत्र में हरदोई, सीतापुर, पीलीभीत इत्यादि क्षेत्रों में बोली जाती है।

सामान्तया: ब्रजभाषा तथा कन्नोजी में भेद करना काफी मुश्किल होता है लेकिन कुछ संरचनागत भेद है जहाँ से, औ की ध्वनि ब्रजभाषा मे संयुक्त रूप मे बोली जाती है, वहीं कन्नोजी में 'अइ' तथा 'अउ' मे बोली जाती है।

कौन > कउन

- कन्नोजी भाषा मे 'ह' का लोप हो जाता है जैसे- ल्हसुन, मंगाई आदि।
- वही य के स्थान पर ज होता है।
  यमुना > जमुना
- व की जगह उ हो जाता है।
  अवतर > अउतार
- अवधी की भाँति उकारान्तता की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की प्रवृत्ति पाई जाती है।
जैसे- कतु, रहतु

व्याकरणिक विशेषताओं में संज्ञा का एक रूप मिलता है। वही सर्वनाम विशेषता काफी हद तक ब्रजभाषा के समान है।

कन्नौजी बोली शौरसेनी अपभ्रंश से ~~व्युत्पन्न~~ उत्पन्न भाषा है जिसको आज भी प्रमुखता से बोला जा रहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

आधुनिक साहित्य में खड़ी बोली को गद्य तथा पद्य के लिए उपयोगी माना गया। लेकिन 19वी सदी मे 'खड़ी बोली' के विकास मे प्रेस की भूमिका ने इसका लोकतांत्रिकरण कर दिया।

ईसाई मिशनरियों ने बाइबिल का हिन्दी अनुवाद करवाकर लोगों में बाँटना शुरु किया जिससे लोग खड़ी बोली से परिचित हुए।

प्रेस के विकास से 'उदन्त मार्तण्ड' जैसे पत्र-पत्रिकाओं का विकास हुआ जिससे आमजन हिन्दी को जान सका और 'खड़ी बोली के प्रति प्रेरित हुआ।

प्रेस के विकास से सामाजिक धार्मिक सुधारों के क्रम मे इसका प्रयोग किया गया, जिससे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ जनता तक पहुँची जिससे खड़ी बोली का विकास हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- प्रेस के विकास से लोगों में मध्यकालीन भोगवादी संस्कृति से नवजागरणवादी विचारधारा का जन्म हुआ जिससे आधुनिकतावादी विचारों को खड़ी बोली ही अपना सकती थी।

- खड़ी बोली के विकास मे पत्र-पत्रिकाओं से जनता सीधे जुड़ पा रही थी तथा अंग्रेजों को भी सुधार के लिए आवश्यक होने लगे। इसी क्रम में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गयी। जिसके प्रमुख जॉन गिलक्राइस्ट तथा सहयोगी इंशा अल्ला खाँ जैसे लोगों ने खड़ी बोली का विकास किया।

प्रेस का विकास खड़ी बोली को जनता से सीधा जुड़ाव प्रदान कर रही थी तथा इसका प्रभाव धार्मिक-सामाजिक सुधारों पर भी सकारात्मक रूप से पड़ा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताए

शौरसेनी अपभ्रंश से ब्रजभाषा की उत्पत्ति मानी जाती हैं। जो ब्रज क्षेत्र मथुरा, आगरा तथा मध्यप्रदेश के मुरैना, ग्वालिर क्षेत्र में प्रमुखता: से प्रयोग में ली जाती है।

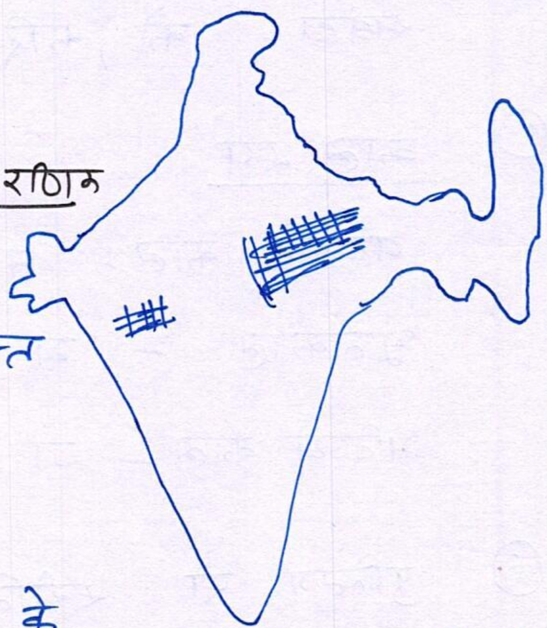

चित्र- ब्रज भाषा के क्षेत्र

ब्रजभाषा की व्याकरणिक विशेषताएं

1. ब्रजभाषा ओकारान्त बहुल भाषा है।
   उदा- करगो, गयो।
2. संज्ञा का अवधी के विपरीत एक रूप मिलता है।
   जैसे - लरिका
3. सर्वनाम व्यवस्था

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मो, मुस माहि	हमारो, हमरो
मध्यम	तुमको, तारो	तुम्हारो, तिहरो
अन्य	वो, वे, वारी	वाको, वाके

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) कारक व्यवस्था।

कर्ता - ने, नै

कर्म - को, कौ, कै

करण - तें, तेहि

संबंध - को, करि, करै

(5) काल रूप

वर्तमान काल - त रूप - करत, चलत

भूतकाल - य रूप - आयौ, गयौ

भविष्य काल - ग रूप - होगौ

(6) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग से 'इया' परसर्ग का प्रयोग करते है-

बिटियाँ, देवरानी (आनी)

इसी तरह ब्रजभाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ सूर युग में प्रमुखता से देखी जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता के उपरान्त 1965 तक हिन्दी को राजभाषा बनना था लेकिन इससे पूर्व ही पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी राज्यों में हिन्दी के प्रति विरोध की लहरें जग चुकी थी।

इसको शान्त करने के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 को लाया गया, जिसमें स्थिति का संतुलन साधने का प्रयास किया गया।

* अंग्रेजी का प्रयोग हिन्दी के साथ यथावत् चलता रहेगा।
* भाषायी तौर पर त्रिभाषा फॉर्मूला अपनाने पर बल दिया गया। जिसको शुरू करने के लिए उत्तरी भारत को आगे बढ़ाया गया।
* राज्य सरकारी कामकाज के लिए हिन्दी तथा अंग्रेजी का प्रयोग कर सकते हैं,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है लेकिन केन्द्र के साथ पत्राचार हिन्दी तथा अंग्रेजी में होगा।

* उच्च न्यायालय के निर्णयों में हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा को प्रयोग में लिया जा सकता है।

* जब तक अहिन्दी भाषी क्षेत्र हिन्दी को अपनाने पर बल नहीं देगे तब तक अंग्रेजी का प्रयोग यूँ ही हिन्दी के साथ चलता रहेगा।

इस तरह राजभाषा अधिनियम 1963 अहिन्दी क्षेत्रों मे हिन्दी के प्रति प्रतिरोध को संभालने में सफल रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

महात्मा गाँधी स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य प्रवर्तक थे। 1915 मे आने के बाद उन्होंने पूरे भारत मे अंग्रेजी सरकार के प्रति विरोध का प्रचार-प्रसार किया।

गाँधीजी ने कहा था " स्वतंत्र भारत की एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए- वह होगी हिन्दी"। गाँधीजी स्वयं यह जानते थे कि हिन्दी ही स्वतंत्रता आंदोलन एकमात्र सम्पर्क भाषा के रूप में काम कर सकती है। उर्दू तथा संस्कृत सिर्फ अभिजात्य वर्ग तथा नौकरशाही वर्ग की भाषा है। अगर जन आंदोलन उत्पन्न करना है तो हिन्दी को प्रमुखता प्रदान करनी होगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

गाँधीजी के सहयोग से वर्धा गुजरात, महाराष्ट्र मे नई हिन्दी सीखने के लिए विभाग खुले तथा असम तथा ओडिशा के लोग हिन्दी भाषा को सीखने के लिए आकर्षित हुए।

c राजगोपालचारी तथा गाँधीजी के प्रयासो से दक्षिणी भारत मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार को अपनाया गया। दक्षिणी भारत के लोग हिन्दी को प्रमुखतया: से अपनाने लगे।

गाँधीजी ने अपने पत्र-पत्रिकाओं मे हिन्दी को भाषा के रूप मे प्रयोग किया। वे यह जानते थे भाषा ही लोगों को एकजुट कर सकती है। जिसके लिए लोगों मे जुड़ाव पैदा किया।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँधीजी के अनुसार "हिन्दी को राष्ट्रभाषा होना चाहिए। जिस तरह हम स्वतंत्र भारत की पूजा करेंगे, उसी प्रकार हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना भी स्वतंत्रता के लिए कदम उठाना जैसा होगा।"

स्वतंत्र भारत मे गाँधीजी के प्रयासों को पूर्णतः सफलता नही मिल पाई है। अहिन्दी भाषी राज्यो जैसे - दक्षिणी तथा तमिल राज्यों द्वारा ~~हिंदि~~ हिंदी का विरोध, राजनीति इच्छाशक्ति मे कमी के कारण हिंदी को आज राजभाषा के रूप में संघर्ष करना पड़ रहा है।

आवश्यक है कि हम भारत के लोग एकजुट होकर गाँधीजी के भारत मे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उनके भाषा मे प्रेम सपने मे साकार करे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि के संबंध पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिपि के माध्यम से भाषा को व्यक्त किया जाता है चाहे वह चित्रात्मक, अक्षरात्मक या वर्णात्मक हो।

सामान्यतः लिपि का विकास भाषा के बाद में होता है जब कोई भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक विकास होता है तो लिपि की जरूरत पड़ती है।

ब्राह्मी लिपि को दो भागों मे विभाजित किया गया, जिसमें दक्षिणी ब्राह्मी लिपि दक्षिणी राज्यों की

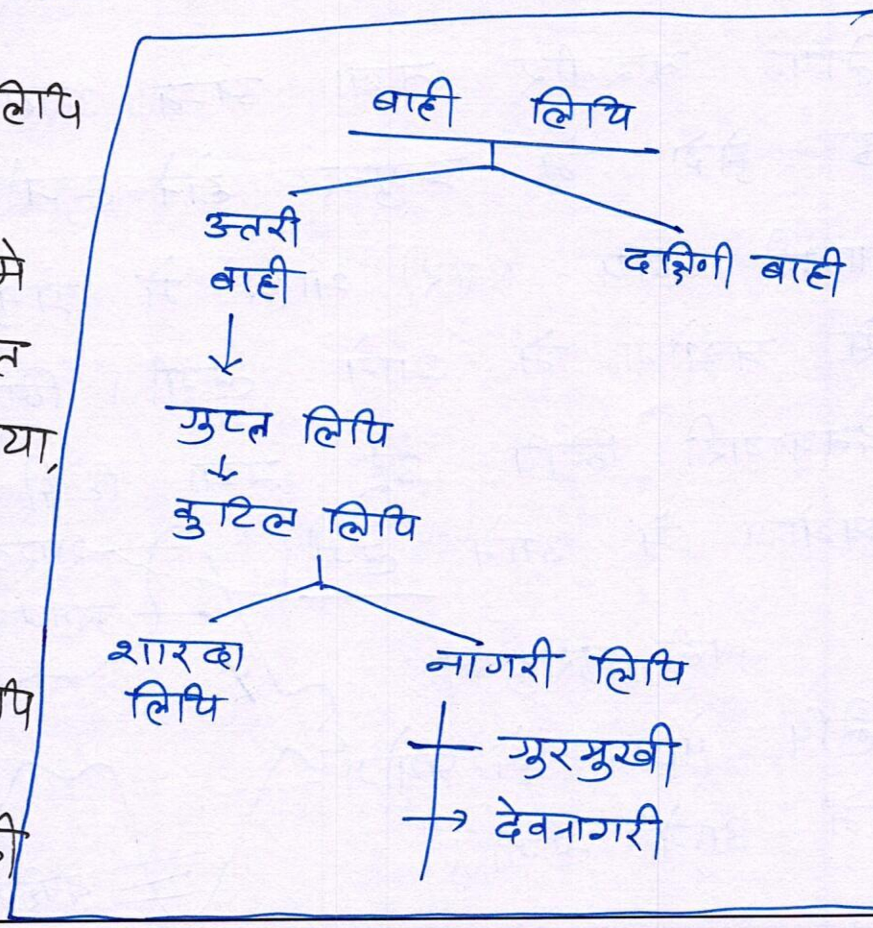

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चारों भाषाओं के काम आने लगी।

वहीं उत्तरी ब्राह्मी लिपि गुप्तकाल में गुप्त लिपि के रूप मे प्रयोग होने लगी। जब गुप्त लिपि टेढ़े-मेढ़े अक्षरों से युक्त होने लगी तो इसे कुटिल लिपि कहा जाने लगा।

कुटिल लिपि में शारदा लिपि कश्मीर तथा अन्य आस-पास के क्षेत्रों में प्रयुक्त होने लगी। वहीं नागरी लिपि उत्तरी भारत में प्रमुखतया से प्रयोग में आने लगी। जिसमें देवनागरी लिपि उर्दू तथा हिन्दी के लिए प्रयोग में आने लगी।

वहीं गुरमुखी लिपि पंजाब मे प्रयोग में आने लगी।

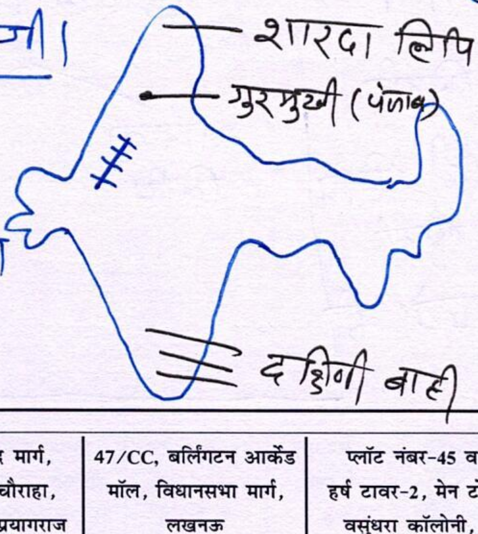

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस तरह ब्राह्मी लिपि से नागरी लिपि के विकास की प्रक्रिया चलती आ रही है।

आज देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता तथा प्रयोगशीलता को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत राजलिपि के रूप में स्थापित किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास मे अप्रतिम योगदान रखती है। इसकी स्थापना शिवकुमार सिंह तथा पंडित नारायण मिश्र ने की थी।

• भाषा के विकास मे प्रमुख कदम "सरस्वती पत्रिका" का श्री गणेश था। जिसने हिन्दी भाषा मे व्याकरणिक प्रयोग, भाषा की द्वैत, अनुशासनहीनता, वाक्य संरचना में शिथिलता तथा अन्वयहीनता इत्यादि का समाधान प्रस्तुत किया।

आचार्य द्विवेदी जी के प्रयासों से हिन्दी भाषा में व्याकरणिक प्रयोग, हिन्दुस्तानी शैली तथा खड़ी बोली को गद्य तथा पद्य में एकनिष्ठता को आगे बढ़ाया गया। इसके लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागरी प्रचारिणी सभा ने वित्तीय सुविधाएँ तथा एक मंच प्रदान किया।

- कामताप्रसाद गुरु तथा किशोरीदास वाजपेयी ने व्याकरण लेखन का प्रयास किए। ये प्रयास भी कहीं ना कहीं नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़े थे

- नागरी सभा ने हिन्दी के विकास के लिए नई मुद्रणशाला खोली तथा हिन्दी शब्दकोश तथा हिन्दी शब्दसागर तथा पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया। इस सभा में भाषा को वैज्ञानिकता से युक्त किया।

लिपि स्तर पर लिपि अशुद्धियाँ काफी प्रचलित थी जैसे- मामें आली दुकान, आगो, गयो इत्यादि पर नागरी प्रचारिणी सभा का ध्यान गया। तथा लिपि सुधार मे बाबू श्याम सुन्दरदास तथा सावरकर बन्धु के प्रयासों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की सफलता को नागरी प्रचारिणी सभा ने नया रूप प्रदान किया।

* देवनागरी लिपि को आधुनिकता के तौर पर स्थापना का श्रेय नागरी प्रचारिणी सभा को जाता है।

* आज भी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी विकास संगोष्ठी इत्यादि में सफल भूमिका निभाती है।

हम कह सकते है नागरी प्रचारिणी सभा का हिन्दी के प्रति प्रेम अतिस्मरणीय है जिसके प्रति हिन्दी अजनबी सदा ऋणी रहेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation